

भोजनरस विभाव संधि

हरिकथाम्इतसार गुरुगळ
करुणादिंदापनितु पैळुवे
परम भगवद्भक्तरीदनादरदि केळुवुदु

वनजजांडदोळुळखिळ चे
तनरु भुंजिप चतुरविध भो
जनपदाथदि चतुर विध रसरूप तानागि
मनके बंदुदनुंडुणिसि सं
हननकुपचय करणकानं
दनिमिषरिगात्मप्रदरहन सुखवनीव हरि ४-१

नीडदंददलिप्प लिंगके
षोडशात्मक रसविभागव
माडि षोडशकलेगळिगे उपचयगळने कोडुत
क्रोड एप्पत्तेरडु साविर
नाडिगतदेवतेगळोळगि
द्वाडुतानंदात्म चरिसुव लोकदोळु तानु ४-२

द्वारुरसवेंदेनिसि मूव

त्तारु साविर स्त्री पुरुष नाडियळु तद्रुप
धारकनु तानागि सर्वश
रीरगळलि अहश्चरात्रि वि
हारमाळपनु बइउहतियेब सुनामदिं करेसि ४-३

आरुरस सत्वादि भेददि
आरु मूरागिहवु सरा
सार नीताप्रचुर खंडाखंड चित्प्रचुर
ईरधिक एप्पत्तुसाविर
मारमणन रसाख्यरूप श
रीरदलि भोज्य सुपदाथदि तिळिदु भुंजिसुवुदु ४-४

ईरगत रसरूपगळु मु
न्नूरु म्यालैवत्तु नालकु
चारु घइतगत रूपगळु इप्पत्तरोभत्तु
सार गुडदोळगैदु साविर
नूरवोंदु सुरूप द्विसह
स्रारेरडु शत पंचविंशति रूप फलगळलि ४-५

विशद स्थिर तीणवु निरहर
रसदोळु मूरैदु साविर

त्रिशतनव रूपगळ चिंतिसि, भुंजिपुदु विषय
श्वसन तत्वेशरोळगिद्धी
पेसरिनिंदलि करेसुवनु धे
निसिदरी परि मनके पोळेवनु बल्ल विबुधरिगे ४-६

कपिल नरहरि भागवत्रय
वपुष नैत्रदि नासिकास्यदि
शफरनामक जिव्हेयलि दंतदलि हंसाख्य
त्रिपदिपाद्य हयास्य वाच्यदो
ळपरिमित सुखपुण संतत
कइपणरोळगिद्धवरवर रस स्वीकरिसि कोडुव ४-७

निरुपमानम्दात्म हरि सं
करुषण प्रद्युम्न रूपदि
इरुतिहनु भोक्तइगळोळगे तच्छक्तिदनु येनिसि
करेसुवनु नारायणनिरु
द्धेरडु नामदि भोज्य वस्तुग
निरुत तपकनागि तइउप्तियनीव चैतनके ४-८

वासुदेवनु ओळहोरगे अव
काश कोडुव नभस्थनागि र

मासमेत विहार माळपनु पंचरूपदलि
आ सरौरुह संभवा भव
वासवादयमरादि चेतन
राशियोळगिहनेंदु अरितवनवने कोविदनु ४-९

वासुदेवनु अन्नदोळु ना
ना सुभयदि संकरुषण कइ
तीश परमान्नदोळु घइतदोळगिप्पननिरुद्ध
आ सुपणांसगनु सूपदि
वासवानुज शाकदोळु मू
लेश नारायणनु सवत्रदलि नेलेसिहनु ४-१०

अगणितात्म सुभोजन पदा
थगळ ओळगे अखंडवादों
दगळिनोळनंतांशदिंदलि खंडनेदिनिसि
जगदि जीवर तइप्ति पडिसुव
स्वगत भेदविवजितन ई
बगेय रूपवनरितु भुंजिसि अपिसुवनडिगे ४-११

ई परियलरितुंब नर नि
त्योपवासि निरामयनु नि

ष्पापि नित्य महत्सुयज~नागळाचरिसिदवनु
पोपुदिप्पुदु बप्पुदेल्ल र
मापतिगधिश्ठानवेन्नु कइ
पापयोनिधि मातनालिसुतिह जननियंते ४-१२

आरेरदु साविरध मेलिन्नोर ऐवथोम्धु रूपधि
सारभोक्थनिरुद्ध धैवनु अन्नमयनेनिप
मूरेरदुवरे साविरध मेल मूरढिक नाल्वथु रूपधि
थोरुथिह प्रध्युम्न जगधूळु प्राणमयनागि ४-१३

एरडु कोशद ओळहोरगे सं
करुषणैदु सुलअदरव
त्तेरडु साविरदेळधिक शतरूपगळ धरिसि
करेसिकोंब मनोमयनु एं
दरविदूरनु ईरेरडु सा
विरद मुन्नोराद मेल्लनाल्कधिक एप्पत्तु ४-१४

रूपदिं विज~नान मयनेंब
ई पेसरिनिं आसुदेवनु
व्यापिसिह महदादि तत्वव तत्पतिगळोळगे
ई पुरुषनामकन शुभस्वै

दापळेनिसि रमांब ता ब्र
हमापरोङ्गळादवर लिंगांग केडिसुवळु ४-१५

ऐदुसाविर नूर इप्प
त्तैदु नारायणन रूपव
ता धरिसिकोंडनुदिनदि आनंदमयनेनिप
ऐदु लअद मैले एंभ
त्तैदु साविर नाल्कु शतगळ
ऐदु कोशात्मक विरिंचांडदोळु तुंबिहनु ४-१६

नूरवोंदु सुरूपदिं शां
तीरमण तानन्ननेनिपै
नूर मैल्मूरधिकदश प्राणाख्हय प्रद्युम्न
तोरुतिहनैवत्तैदु वि
कार मनदोळु संकरुषणै
नूरु चतुराशीति विज~नानात्म विश्वाख्हय ४-१७

मूरु साविरदधशत मै
लीरधिकरूपगळ धरिसि श
रीरदोळगानंदमय नारायणाहवयनु
ईरेरडु साविरद मैल्मु

न्नूरु ऐदु सुरूपदिंदलि

भारतीशनोळिप्प नवनीतस्थ घृतदंते ४-१८

मूरधिक ऐवत्तु प्राण श

रीरदोळगनिरुद्धनिप्पै

नूरु हन्नोदधिकपाननोळिप्पै प्रद्युम्न

मूरनेय व्याननोळगैदरे

नूरु रूपदि संकरुषणै

नूरु मूवत्तै दुदाननोळिप्प मायेश ४-१९

मूलनारायणनु ऐव

त्तेळधिक ऐनूरु रूपव

ताळि सवत्रदि समाननोळिप्प सवेश

लीलेगैवनु साविरद मे

लेळु नूहन्नोदु रूपव

ताळि पंचप्राणरोळु लोकगळ सलहुवनु ४-२०

त्रिनवति स्वरूपात्मकनिरु

द्धनु सदा यजमाननागि

द्धनल यम सोमादि पितइदेवतेगळिगे अन्न

नेनिपना प्रद्युम्न संकरु

षण विभागव माडिकों

डुणिप नित्यानंद भोजनदायि तुयाहव ४-२१

षण्णवतिनामकनु वसु मू

क्कण्ण भास्कररोळगे नितु प्र

पन्न रनुदिन निष्कपट सद्भक्तियलि माळप

पुण्य कमव स्वीकरिसि का

रुण्य सागरना पितइगळिगे

गण्य सुखवित्तवर पोरेवनु एल्ल कालदलि ४-२२

सुतपनेकोत्तर सुपंचा

शतवरण करणादि चतुविं

शति सुतत्वदि धातुगळोळगिद्विविरतनिरुद्ध

जतन माळपनु जगदि जीव

प्रततिगळ षण्णवति नामक

चतुर मूतिगळचिसुवरदरिंदे बल्लवरु ४-२३

अंबुजजांडोदरनु विपिनदि

शबरियेंजलनुंडु गोकुल

दबलेयरनोलिसिदनु इषि पत्नियरु कोट्टन्न

सुभुज ता भुंजिसिद स्वरमण

कुबुजे गंधके ओलिद मुनिगण
विबुधसेवित बिडुवने नावित्त कमफल ४-२४

गणनेयिल्लद परमसुख स
द्गुणगणंगळ लेशलेशके
एणेयेनिसदु रमाब्ज भवशक्रादिगळ सुखवु
उणुतुणुतमै मरेदु कइष्णा
पणवेनलु कैकोबनभक
जननि भोजन समयदलि कैयोड्डुवंददलि ४-२५

जीव कइत कमगळ बिडदे र
मावरनु सईकरिसि फलगळ
नीवनधिकारानुसारदलवरिगनवरत
पावकनु सवस्व भुंजिसि
ता विकारवनैदनोम्मेगु
पावकने पावननेनिप हरियुंबुदेनरिदु ४-२६

कलुष जिह्वेगे सुष्ठुभोजन
जल मोदलु विषदोरुवुदु नि
ष्कलुष जिह्वेगे सुरस तोरुवुदेल्ल कालदलि
सुललितांगगे सकलरस मं

गळवेनिसुतिहुदन्नमय कै
कोळदे बिडुवने पूतनिय विषमोलेयनुंडवनु ४-२७

पेळलेनु समीरदेवनु
कालकूटवनुंडु लोकव
पालिसिद तद्दासनोवनु अमइउतनेनिसिदनु
श्री लकुमिवल्लभ शुभाशुभ
जालकमगळुंबनुपचय
देदेळिगेगळवगिल्लवेदिगु स्वरसगळ बिट्टु ४-२८

ई परियलच्युतन तत्त
द्रूप तन्नामगळ सले ना
ना पदाथदि नेनेनेनेदु भुंजिसुतलिरु विषय
प्रापक स्थापक नियामक
व्यापकनुयेंदरिदु नी नि
लेपनागिरु पुण्य पापगळनपिसवनडिगे ४-२९

ऐदु लएंभत्तरोंभ
त्ताद साविरदेळुनूरर
ऐदु रूपव धरिसि भोक्तइग भोज्यनेंदेनिसि
श्रीधरा दुगारमण पा

दादि शिरपयंत व्यापिसि

कादुकोंडिह संतत जगन्नाथ विठ्ठलनु ४-३०

www.yousigma.com